479वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 40 | द्वादश अंक | जुलाई 2018

इस अंक में...

12 स्व-प्रेरणा जनित उपलब्धि बुद्धिमान व्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ गुण
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
20 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
29 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
38 नवीनतम सामान्य ज्ञान
45 रोजगार समाचार
47 चेन्नई सुपरकिंग्स तीसरी बार आईपीएल की विजेता
50 खेलकूद
52 युवा प्रतिभाएं
61 सिविल सेवा परीक्षा में हिन्दी माध्यम से सफलता-स्थितियाँ विकट पर, इसका निदान है—केवल साहस, आशा और एक सकारात्मक सोच
66 विश्व परिदृश्य
72 स्मरणीय तथ्य
75 फोकस—मानव विकास हेतु ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी
79 उत्तर प्रदेश से सम्बन्धित टिप्पणियाँ—उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा हेतु विशेष
83 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
85 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
88 सामयिक लेख—दक्षिण की गंगा 'कावेरी नदी' का जल विवाद : नए परिप्रेक्ष्य में
90 विधिक लेख—विधि निर्णय
91 राष्ट्रीय लेख—राष्ट्रवाद की अवधारणा एवं भारत
94 कला-संस्कृति लेख—भारत की विभिन्न शास्त्रीय नृत्यकलाओं का उद्भव एवं विकास
98 पारिस्थितिकी लेख—पारिस्थितिकी के सिद्धान्त
100 ऊर्जा लेख—अन्तर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन शिखर सम्मेलन
103 प्रतिरक्षा लेख—ब्रह्मोस मिसाइल
105 कृषक लेख—क्या लौटेंगे अन्नदाता के अच्छे दिन
107 आपदा लेख—ग्लोबल वार्मिंग : समस्या व निदान
110 वैज्ञानिक लेख—बच्चों पर किए शोध का नतीजा-स्वच्छता से सावधान, बच्चों को मिट्टी में खेलने दें
112 सार संग्रह
117 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान (i) सिविल सेवा (प्रा.) परीक्षा, 2018
129 (ii) म.प्र. पी.एस.सी. राज्य/वन सेवा (प्रा.) परीक्षा, 2018
138 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
140 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
142 उत्तर प्रदेश सहायक अध्यापक (प्रशिक्षित स्नातक श्रेणी) भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
143 ऐच्छिक विषय—(i) दृश्य कलाएं—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2017
147 (ii) शारीरिक शिक्षा—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2017
156 सामान्य जानकारी—एस.एस.सी. संयुक्त स्नातक स्तरीय परीक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य
162 तर्कशक्ति एवं विश्लेषणात्मक अभियोग्यता-आई.डी.बी.आई. एक्जीक्यूटिव परीक्षा 2017
168 संख्यात्मक अभियोग्यता—आई.बी.पी.एस. पी.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2017
172 अपना ज्ञान बढ़ाइए
173 क्या आप जानते हैं ?
174 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—धार्मिक तुष्टिकरण लोकतान्त्रिक व्यवस्था का अभिन्न अंग बन गया है
176 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में लोकलुभावन नीतियों की सार्थकता
178 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—468 का परिणाम

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

स्व-प्रेरणा जनित उपलब्धि बुद्धिमान व्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ गुण

✍ साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

"You are your master. Only you have the master keys to open the inner locks."

— **Amit Ray**

जो खुद के कल से आज को बेहतर बनाना चाहता है, जो प्राप्त हो चुका उस उपलब्धि पर नहीं इठलाता है, बल्कि प्राप्त हो गई हर उपलब्धि के वर्तमान क्षण को सजाता है, वह व्यक्ति जीवन की श्रेष्ठतम सम्भावना का साक्षात्कार कर पाता है.

हम में से प्रत्येक व्यक्ति को सतत् आगे बढ़ना होता है, हर दिन अपने कर्म क्षेत्र में खुद की योग्यताओं को विकसित करना होता है, अन्यथा हम पिछड़ जाएंगे और पछाड़ दिए जाएंगे. हमें हार नहीं जीत पसंद है. अपमान नहीं स्व-मान पसंद है, तो निश्चित है कि हर हाल में हमारा विकास हो, हम अपने कल से आज को बेहतर बनाएं. इसके लिए हमें प्रेरणा तो चाहिए ही, परन्तु हमारी प्रेरणा टीवी के विज्ञापन न हों. स्कूल, कॉलेज या नगर राज्य के इलेक्शन ना हों, बढ़ती महँगाई की मार या गलाकट प्रतिस्पर्धी माहौल ना हो. हमारी प्रेरणा का स्रोत बाहरी चुनौतियाँ या दबाव न हों. हमारी प्रेरणा किसी दुःखद घटना का, मृत्यु शोक या वियोग का इंतजार न करें. हमारे विकास की प्रेरणा किसी परीक्षा की घड़ी की मोहताज न बने.

हमें हर दिन को अपना अन्तिम दिन समझते हुए अपने जीवन के सर्वश्रेष्ठ कृत्यों को आज ही पूरा कर लेना है और इसके लिए हमारी प्रेरणा कोई और नहीं हम स्वयं बनें. हम ही अपने हालातों को बुनें. हमारे जीवन का पथ हम चुनें.

प्रेरणाओं के स्रोत अनेक हैं—

(1) इच्छाओं से उत्पन्न प्रेरणा–यह भी भीतर से ही उत्पन्न होती है.

अक्सर हम सभी इच्छा जनित प्रेरणा के चलाए चलते हैं और इच्छानुसार प्रवृत्ति करने में जीवन भर मशगूल रहते हैं, किन्तु हमारी इच्छाएं कभी तृप्त नहीं होतीं. जब हम एक स्तर तक पहुँचते हैं तुरन्त दूसरे को देखकर मन में प्रतिस्पर्धा जगती है और तुलनात्मक रीडिंग चालू हो जाती है. इस तरह हम सदा आगे बढ़ते जाते हैं. इच्छा जनित प्रेरणा में अगर दुर्भावना न हो, हीन भावना न हो, प्रदर्शन की गौरव परक भावना न हो, अधीरता से उत्पन्न निराशा न हो तो इंसान अपने जीवन में एक चिर स्थायी समृद्धि व वैभव प्राप्त कर पाता है. इच्छाएं उठना मनुष्य के मन का स्वाभाविक क्रम है. अगर हम इच्छाओं को अपने विवेक से संशुद्ध (Filter) करके अपनाएं तो जीवन सुखद बनता है. अन्यथा लोगों को इच्छाओं की बेलगाम दौड़ में गिर-पड़ कर मर जाते देखा गया है. कई लोग किसी एक फील्ड में अपनी अनियंत्रित इच्छाओं के दबाव में आकर कुछ इस कदर अतिक्रमण कर बैठते हैं कि वे अपने दुष्कृत्यों का फल भोग बहुत तड़प-तड़प कर करते हैं. जैसे आज के युवाओं में शोर्टकट धन कमाने की बेलगाम इच्छा ने उन्हें जुआ, सट्टा, चोरी, विश्वासघात तक करने को उतारू बना दिया. वे अपने ही माता-पिता के धन को चुराकर अपना कर्जा उतार रहे हैं अथवा अय्याशी करते पाए जा रहे हैं. ये अनियंत्रित इच्छाएं व अविवेकजनक प्रेरणाएं आदमी के पूरे जीवन पर कालिख पोत देती हैं. दोस्तों के साथ रिश्तों को सुनकर अपने लिए भी किसी को फँसाने की चेष्टा, किसी की कमी को जानकर उसको ब्लेकमेल करने की चेष्टा, जो आज के युवाओं में देखी जा रही है, उसके लिए समाज के अनुभवी लोग बेहद शर्मिंदगी महसूस कर रहे हैं. अपने कॅरियर के बचाव के लिए भी कई लोग औरों का जीवन उजाड़ने में संकोच नहीं करते हैं. इस प्रकार की इच्छाजनित प्रेरणाएं आदमी को भयंकर गर्त में डाल रही हैं.